मित्रता

एक राजकुँअर थे । स्कूल में पढ़ने के लिए जाते थे। वहाँ प्रजा के बालक भी पढ़ने जाते थे । उनमें से पाँच-सात बालक राजकुँअर के मित्र हो गये । वे मित्र बोले- 'आप राजकुँअर हो, राजगद्दी के मालिक हो । आज आप प्रेम और स्नेह करते हो, लेकिन राजगद्दी मिलने पर ऐसा ही प्रेम निभायेंगे, तब हम समझेंगे कि मित्रता है, नहीं तो क्या है?' राजकुँअर बोले कि अच्छी बात है । समय बीतता गया । सब बड़े हो गये । राजकुँअर को राजगद्दी मिल गयी । एक-दो वर्ग में राज्य अच्छी प्रकार जम गया । राजकुँअर ने अपने मित्रों में से एक को बुलाया और कहा कि तुम्हें याद है कि तुम ने कहा था - 'राजा बनने के बाद मित्रता निभाओ, तब समझें ।' 'अब तुम्हें तीन दिन के लिये राज्य दिया जाता है । आप राजगद्दी पर बैठो और राज्य करो ।' वह बोला- 'अन्नदाता ! वह तो बचपन की बात थी । मैं राज्य नहीं चाहता ।' बहुत आग्रह करने पर उस मित्र ने तीन दिन के लिए राज्य स्वीकार कर लिया ।

वह मित्र राजगद्दी पर बैठा और उस दिन खान-पान, ऐश-आराम में मगन हो गया । दूसरे दिन सैर-सपाटा आदि में लगा रहा । रात हुई तो बोला -'हम तो राजमहल में जाएंगे ।' सब बड़ी मुश्किल में पड़ गये । रानी बड़ी पतिव्रता थी । वह मित्र तो अड़ गया कि सब कुछ मेरा है, मै राजा हूँ तो रानी भी मेरी है । रानी ने अपने कुलगुरु ब्राह्मण देवता से पुछवाया कि अब मैं क्या करूँ ? गुरुजी महाराज ने कहा- 'बेटी ! तुम चिन्ता मत करो, हम सब ठीक कर देंगे ।' गुरुजी ने उस तीन दिन के लिए राजा बने मित्र से पूछा कि आप महलों में जाना चाहते हैं तो राजा की भाँति जाना होगा । इसलिए आपका ठीक तरह से शृंगार होगा । उन्होंने भृत्यों को बुलाया और आज्ञा दी - महाराज के महलों में जाने की तैयारी करो, शृंगार करो। नाई को बुलाया और कहा कि महाराज की हजामत करो ठीक ढंग से । 3-4 घण्टे हो गये, तब वह राजा बोला- ऐसे क्यों देरी लगाते हो ? तो नाई बोला -महाराज ! राजाओं का मामला है, साधारण आदमी की तरह हजामत कैसे होगी ? हजामत लम्बी कर दी अर्थात् बहुत देर लगा दी । इसके बाद पोशाक पहनानेवाला आदमी आया । उसने बहुत देर पोशाक पहनाने में लगा दी । उसके बाद इत्र-तेल-फुलेल आदि लगानेवाला आया । उसने देर लगायी। इस प्रकार शृंगार.शृंगार में ही रात बीत गयी । अब सुबह हो गयी । अन्तिम दिन थे। समय पूरा हो गया और राजगद्दी वापस राजा साहब को मिल गयी । राजा साहब ने अब अपने दूसरे मित्र को बुलाया और आग्रहपूर्वक तीन दिन के लिए राज्य दे दिया और बोले कि मैं, मेरी स्त्री, मेरा घर-ये सब तो मेरे हैं । मैं भी आपकी प्रजा हूँ । बाकी सारा राज्य आपका है । वह मित्र तीन दिन के लिये राजा बन गया ।

राज्य मिलते ही उस मित्र ने पूछा कि मेरा कितना अधिकार है ? मंत्री ने जवाब दिया - 'महाराज ! सारी फौज, पलटन, खजाना और इतनी पृथ्वी पर आपका राज्य है।' उसने

दस-बीस योग्य अधिकारियों को बुलाकर कहा कि हमारे राज्य में कहाँ - कहाँ, क्या-क्या चीज की कमी है, किसके क्या-क्या तकलीफें हैं- पता लगाकर मुझे बताओ । उन्होंने आकर खबर दी - फलां-फलां गाँव में पानी की तकलीफ है, कुआँ नहीं है, धर्मशाला नहीं है, पाठशाला नहीं है । उस राजा ने हुक्म दिया कि सब गाँवों में जहाँ जो कमी है, तीन दिन में पूरी हो जानी चाहिए । खजांची को कह दिया कि मकान, धर्मशाला, पाठशाला, कुएँ आदि बनाने में जो भी खर्च हो, वह तुरन्त दिया जाय । राजा का हुक्म होते ही अनेक लोग राजाज्ञा के पालन में लग गए । तीन दिन पूरे होते-होते विभिन्न स्थानों से समाचार आने लगे कि इतना-इतना काम हो गया है और इतना बाकी रहा है । जल्दी पूरा करने का आदेश देकर, उस मित्र ने राज्य वापस राजा को दे दिया । राजा बड़े प्रसन्न हुए और बोले कि हम तुम्हें जाने नहीं देंगे । अपना मंत्री बनायेंगे । हमें राज्य मिला, लेकिन हमने प्रजा का इतना ध्यान नहीं रखा, जितना आपने तीन दिन में रखा है । अब राजा तो नाम-मात्र के रहे, और वह मित्र सदा के लिये, उनका विश्वासपात्र मंत्री बन गया ।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

दया की महिमा

एक बहेलिया था । चिड़ियों को जाल में या गोंद लगे बड़े भारी बाँस में फँसा लेना और उन्हें बेच डालना ही उसका काम था । चिड़ियों को बेचकर उसे जो पैसे मिलते थे, उसी से वह काम चलाता था ।

एक दिन वह बहेलिया अपनी चद्दर एक पेड़ के नीचे रखकर अपना बड़ा भारी बाँस लिये किसी चिड़िया के पेड़ पर आकर बैठने की राह देखता बैठा था । इतने में एक टिटिहरी चिल्लाती दौड़ी आयी और बहेलिये की चद्दर में छिप गयी ।

टिटिहरी ऐसी चिड़िया नहीं होती कि उसे कोई पालने के लिए खरीदे । बहेलिया उठा और उसने सोचा कि अपनी चद्दर में से टिटिहरी को भगा देना चाहिए । इसी समय वहाँ ऊपर उड़ता एक बाज दिखायी पड़ा । बहेलिया समझ गया कि यह बाज टिटिहरी को पकड़कर खा जाने के लिये झपटा होगा, इसी से टिटिहरी डरकर मेरी चद्दर में छिपी है । बहेलिये के मन में टिटिहरी पर दया आ गयी ।उसने ढेले मारकर बाज को वहाँ से भगा दिया। बाज के चले जाने पर टिटिहरी चद्दर से निकल कर चली गयी ।

कुछ दिनों बाद बहेलिया बीमार हुआ और मर गया । यमराज के दूत उसे पकड़ कर यमपुरी ले गये । यमपुरी में कहीं आग जल रही थी, कहीं चूल्हे पर बड़े भारी कड़ाहे में तेल उबल रहा था । पापी लोग आग में भूने जाते थे, तेल में उबाले जाते थे । यमराज के दूत पापियों को कहीं कोड़ों से पीटते थे, कहीं कुल्हाड़ी से काटते थे । और भी भयानक क-ट पापियों को वहाँ दिया जाता था । बहेलिये के वहाँ जाते ही, वहाँ सैकड़ों, हजारों चिडियाँ आ गयीं और वे कहने लगीं -- इसने हमें बिना अपराध के फँसाया और बेचा है । हम इसकी आँखें फोड़ देंगे और इसका मांस नोच-नोचकर खाएंगे ।

बेचारा बहेलिया डर के मारे थर-थर काँपने लगा । उसी समय वहां टिटिहरी आयी । उसने हाथ जोड़कर यमराज से कहा- 'महाराज ! इसने बाज से मेरे प्राण बचाये हैं । इसको आप क्षमा करें ।'

यमराज बोले - 'यह बड़ा पापी है । सब चिड़ियाँ इसे नोचेंगी और फिर इसे जलाया जायगा और कुल्हाड़ी से काटा जाएगा । लेकिन यह छोटी टिटिहरी इसको बचाने आयी है । इसने एक बार इस चिड़िया पर दया की है । इसलिए इसको अभी संसार में लौटा दो और इसे एक व-र्ा जीने दो ।'

यमराज के दूतों ने बहेलिये के जीवन को वापस लौटा दिया । बहेलिये के घर के लोग उसकी देह को श्मशान ले गये थे और चिता पर रखने वाले थे । वे लोग रो रहे थे ।

इतने में बहेलिया जी गया । वह बोलने और हिलने लगा । उसके घर के लोग बहुत प्रसन्न हुए और उसके साथ घर लौट आये ।

बहेलिये को यमराज की बात याद थी । उसने चिड़िया पकड़ना छोड़ दिया । अपने भाइयों से भी चिड़िया पकड़ने का काम उसने छुड़ा दिया । वह मजदूरी करने लगा । सबेरे और शाम को वह रोज चिड़ियों को थोड़े दाने डालता था । बहुत-सी चिड़ियाँ उसके दाने खा जाया करती थीं । अब रोज वह भगवान की प्रार्थना करता था और भगवान का नाम जपता था । इससे बहेलिये के सब पाप कट गये । एक व-र्ं बाद जब वह मरा, तब उसे लेने देवताओं का विमान आया और वह स्वर्ग चला गया ।

हमें भी किसी भी जीव को क-ट नहीं देना चाहिए । सभी जीवों पर दया करनी चाहिए। जो जीवों पर दया करता है, उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं,

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय